दलित महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में बिहार के बढ़ते कदम

अनिल कुमार

महिला सशक्तिकरण का अभिप्राय दलित महिलाओं को पुरुषों के बराबर वैधानिक, राजनीतिक, मानसिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में उनके परिवार, समुदाय, समाज एवं राष्ट्र की सांस्कृति पृष्ठभूमि में निर्णय लेने की स्वतंत्रता से है। दलित महिलाओं में इस प्रकार की क्षमता का विकास जिससे वे अपने जीवन के निर्वाह इच्छानुसार कर सकने में सक्षम हों एवं उनके अन्दर आत्मविश्वास और स्वाभिमान को जागृत करना है। यह महत्वपूर्ण तथ्य है कि किसी भी प्रकार के सशक्तिकरण को गति प्रदान करने के लिए राजनीतिक सशक्तिकरण एक आवश्यक शर्त है। जिसका अर्थ है एक न्यायपूर्ण तथा समतामूलक समाज की स्थापना। इसलिए लिंगगत समानता को सुशासन की कुंजी कहा जा सकता है। दलित महिला सशक्तिकरण में पंचायती राज का खास महत्व है क्योंकि इसके माध्यम से सामाजिक सशक्तिकरण लाने का प्रयास किया जा रहा है। यह ठीक उसी तरह है कि जिस तरह बिहार में लोकतंत्र के अंतर्गत राजनीतिक समानता के सिद्धान्त ने सामाजिक असमानता के दीवारों को कमजोर किया है।